ISBN: 978-81-974088-0-9

9. दिव्यांगता की समस्या एवं समाधान

हेमलता वर्मा

(सहा. प्रा.), कृति इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन,
रायपुर, छ.ग.

प्रस्तावनाः–

दिव्यांगता वाले प्रत्येक छात्र को हर दिन अलग–अलग बाधाओं का सामना करना पड़ता है। किसी शारीरिक या मानसिक विकार के कारण एक सामान्य मनुष्य की तरह किसी कार्य (जो मानव के लिये सामान्य समझी जाने वाली सीमा के भीतर हो) को करने में परेशानी या न कर पाने की क्षमता को दिव्यांगता के रूप में पारिभाषित किया जाता है।

ऐसा कोई व्यक्ति, जो किसी चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा यथाप्रमाणित किसी निःशक्तता से कम से कम 40 प्रतिशत ग्रस्त है। जो व्यक्ति, किसी कारणवश, शारीरिक रूप से अपंग हो, उसे अपाहिज या दिव्यांग पुकारने के बदले, सम्मान–पूर्वक दिव्यांग कहा जाता है।

दिव्यांगता का अर्थः–

दिव्यांग या दिव्यांगजन का हिंदी में अर्थ दिव्यांग व्यक्तियों को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। दिव्यांग शब्द के प्रचलन से पहले नियमित रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द दिव्यांग था, जिसका अर्थ था 'गैर–कामकाजी शरीर के अंग वाला व्यक्ति'।

दिव्यांग शब्द का अंग्रेजी में अर्थ है 'दिव्य शरीर का अंग वाला व्यक्ति'। भाषा में यह जानबूझकर किया गया बदलाव उसी स्थिति के लिए भाषा में इसी तरह के बदलाव के समान माना जा सकता है जो पूरी दुनिया में हो रहा है।

'अपंग', 'दिव्यांग' और 'दिव्यांग' शब्दों को 'भिन्न रूप से सक्षम' और 'शारीरिक रूप से दिव्यांग' शब्दों से बदल दिया गया है। अंग्रेजी में दिव्यांग शब्द का अर्थ भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा गढ़ा गया था और अब यह शब्द आधिकारिक और कानूनी प्रवचन में दिव्यांग लोगों का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है।

भारत में कुल कितने दिव्यांग है?

भारत में 121 करोड़ की आबादी में से 2.68 करोड़ व्यक्ति 'दिव्यांग' हैं जो कुल जनसंख्या का 2.21ः है। दिव्यांग जनसंख्या में 56ः (1.5 करोड़) पुरुष हैं और 44ः (1.18 करोड़) महिलाएँ हैं। कुल जनसंख्या में पुरुष और महिला जनसंख्या क्रमशः 51ः और 49ः है।

दिव्यांगता के प्रकार :-

अधिनियम के अंतर्गत दिव्यांगता के 21 प्रकार एवं उनके लक्षण जैसे चलन दिव्यांगता, बौनापन, मांसपेशी दुर्विकास, तेजाब हमला पीड़ित, दृष्टि बाधित, अल्पदृष्टि, श्रवण बाधित, कम, ऊंचा सुनना, बोलने एवं भाषा की दिव्यांगता, कुष्ठ रोग से मुक्त, प्रमस्तिष्क घात, बहु दिव्यांगता, बौद्धिक दिव्यांगता, सीखने की दिव्यांगता, स्वलीनता,.मानसिक रूगणता, बहु–स्केलेरोसिस, पार्किसंस, हेमोफीलिया, थेलेसीमिया, सिक्कल कोशिका रोग शामिल है। यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे लोग दिव्यांग व्यक्तियों के साथ व्यवहार कर सकते हैं और उनका समर्थन कर सकते हैंः

1. सम्मान और गरिमाः दिव्यांग व्यक्तियों के साथ अन्य लोगों की तरह ही सम्मान और गरिमा के साथ व्यवहार करें। उनकी दिव्यांगता के आधार पर उनकी क्षमताओं या जरूरतों के बारे में धारणा बनाने से बचें।
2. समावेशिताः दिव्यांग लोगों को बातचीत, गतिविधियों और आयोजनों में शामिल करें। उन्हें अलग–थलग या अलग–थलग करने से बचें।
3. व्यक्ति–प्रथम भाषा का प्रयोग करेंः ऐसी भाषा का प्रयोग करें जो व्यक्ति को उसकी दिव्यांगता से अधिक प्राथमिकता दे। उदाहरण के लिए, ''अंधे व्यक्ति'' के बजाय ''दृष्टिबाधित व्यक्ति'' कहें।
4. धैर्यवान और चौकस रहेंः दिव्यांग व्यक्तियों को संवाद करने या कार्य पूरा करने के लिए आवश्यक समय दें। उनके साथ बातचीत करते समय धैर्यवान और चौकस रहें।
5. सहायता करने से पहले पूछेंः यदि आप किसी दिव्यांग व्यक्ति की मदद करना चाहते हैं, तो हमेशा कार्रवाई करने से पहले पूछें कि क्या उन्हें सहायता की आवश्यकता है। उनकी स्वायत्तता और विकल्पों का सम्मान करें।

6. सुलभ वातावरणः जब भी संभव हो, सुलभ वातावरण बनाएँ। इसमें रैंप, लिफ्ट, ब्रेल साइनेज और अन्य सुविधाएँ प्रदान करना शामिल है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी के लिए स्थान उपयोग योग्य हों।
7. संचारः किसी दिव्यांग व्यक्ति से बात करते समय, आँख से आँख मिलाएँ और सीधे उनसे बात करें, किसी साथी या दुभाषिए के जरिए नहीं, जब तक कि वे अन्यथा संकेत न दें। अपने संचार में स्पष्ट और संक्षिप्त रहें।
8. खुद को शिक्षित करेंः अलग–अलग तरह की दिव्यांगताओं और उनकी संभावित चुनौतियों के बारे में खुद को शिक्षित करें। इससे आपको व्यक्तियों की जरूरतों को बेहतर ढंग से समझने और उनके साथ सहानुभूति रखने में मदद मिल सकती है।

दिव्यांग छात्रों की समस्या :–

1. दिव्यांग छात्र को पाठ के दौरान स्थिर बैठना या ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो सकता है। कक्षा की सजावट, सहपाठी और अन्य उत्तेजनाएँ दिव्यांग छात्र के लिए विचलित करने वाली हो सकती हैं, जिससे शिक्षक पर ध्यान देना लगभग असंभव हो जाता है।
2. कुछ दिव्यांगताएँ सामाजिक स्थितियों को भ्रमित या नेविगेट करना मुश्किल बना सकती हैं। दिव्यांग व्यक्तियों के प्रति साथियों के संभावित नकारात्मक दृष्टिकोण या रूढ़िवादिता इस जटिल मुद्दे को और बढ़ा देती है। दिव्यांग छात्रों को दोस्ती बनाने या बनाए रखने में संघर्ष करना पड़ता है।
3. एडीएचडी या डिस्लेक्सिया जैसी दिव्यांगता वाले छात्र अपने साथियों की तुलना में धीमी गति से पढ़ या लिख सकते हैं। पिछड़ने से अक्सर छात्र निराश या हतोत्साहित महसूस करते हैं।
4. जब कोई कक्षा विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए दुर्गम होती है, तो यह उनके सहपाठियों के साथ सीखने की उनकी क्षमता में बाधा डालती है। चाहे वह भौतिक बाधाएँ हों या संसाधनों की कमी, कई कक्षाएँ सभी छात्रों के लिए उचित सुविधाएँ प्रदान नहीं करती हैं।
5. कुछ शिक्षकों को अपने छात्रों की दिव्यांगता की सीमा के बारे में पता नहीं है। यह परिस्थिति शिक्षक और छात्र दोनों के लिए सीखने की समस्याएँ पैदा करती है।

समाधान :—

1. शिक्षकों को एक साफ—सुथरी कक्षा बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए। इसे साफ—सुथरा और व्यवस्थित रखने से ध्यान भटकाने वाली चीजों को कम करने में मदद मिल सकती है। शिक्षक छात्रों के लिए मजेदार संगठनात्मक प्रणाली भी लागू कर सकते हैं जिसमें वे भाग ले सकें!

2. साथियों की सलाह की सुंदरता को अपनाएँ। जब संभव हो, शिक्षकों को दिव्यांग छात्रों को उन छात्रों के साथ जोड़ना चाहिए जो दिव्यांग नहीं हैं। इससे छात्रों को नए साथियों के साथ घुलने—मिलने और एक—दूसरे की अनूठी ताकत और ज्ञान से सीखने का मौका मिलता है। साथियों की सलाह के दरवाजे खोलने से सभी छात्रों को सामाजिक कौशल, स्वतंत्रता और समस्या समाधान विकसित करने में मदद मिल सकती है। यह छात्रों के लिए एक—दूसरे को प्रेरित करने और अप्रत्याशित दोस्ती को बढ़ावा देने का सबसे अच्छा तरीका है!

3. हर छात्र अलग—अलग तरीके से सीखता है। शिक्षकों को सभी छात्रों की सीखने की विधियों को ध्यान में रखते हुए लचीला बने रहने की आवश्यकता है। विभिन्न शिक्षण शैलियों की खोज करके प्रत्येक छात्र की विशिष्टता को अपनाएँ!

4. दिव्यांग छात्रों के लिए वकालत करें। चाहे आप माता—पिता हों, शिक्षक हों या कोई अन्य स्टाफ सदस्य हों, दिव्यांग छात्रों का समर्थन करने के बारे में मुखर होना महत्वपूर्ण है, चाहे वह गैर—मौखिक शिक्षार्थियों के लिए सहायक तकनीक हो , व्हीलचेयर में छात्रों के लिए सुलभ दरवाजे हों, या विशेष शिक्षा में विशेषज्ञता रखने वाले शिक्षक सहायक हों। यदि आपको कक्षा में संसाधनों की कमी नजर आती है, तो बोलें। आखिरकार, एक शिक्षक केवल एक व्यक्ति होता है। उनकी आवाज बुलंद करें और अधिक सुविधाजनक कक्षाओं के लिए वकालत करें!

5. दिव्यांगता वाले प्रत्येक छात्र के लिए स्पष्ट समायोजन, संशोधन और प्ब्च होना चाहिए जो विशेष रूप से उनके लिए डिजाइन किए गए हों। शिक्षकों को अपने सभी छात्रों की दिव्यांगताओं और उन्हें उचित तरीके से पढ़ाने के तरीके के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए। दिव्यांग छात्रों की मदद करने के लिए एक सामान्य दृष्टिकोण पर निर्भर रहने के अलावा, समायोजन

का मूल्यांकन व्यक्तिगत आधार पर किया जाना चाहिए। हर छात्र अलग होता है और अपने स्वयं के अनूठे संघर्षों से निपटता है, इसलिए कक्षा में वयस्कों को उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

निष्कर्ष :–

दिव्यांग व्यक्तियों को अपने दैनिक कार्य करने के लिए गतिविधियाँ और उनकी दिव्यांगता के बारे में उनकी धारणाएँ या दिव्यांगता। यह पाया गया है कि अधिकांश लोग वे अशिक्षित हैं, बेरोजगार हैं लेकिन अपनी दैनिक दिनचर्या को स्वतंत्र रूप से करने में सक्षम उनमें से अधिकांश में यथार्थवादी गतिविधियाँ हैं उनकी दिव्यांगता के बारे में धारणाएं और उन्हें चुनौती का सामना करने और आगे बढ़ने में सक्षम बनाना।

सन्दर्भ सूची :–

1. प्रियादर्शिनी मिश्र ,दयारानी ,बहुदिव्यांगता
2. स्वदेश राय, दिव्यांगता का परिचय
3. हिना सिद्दीकी ,समावेशी शिक्षा
4. https://uphwd.gov.in/hi/page/definition-of-disability
5. Viklang Balak by Jagat Singh: "Viklang Balak" by Jagat Singh
6. Vividhta samavesshi aur gender NCERT
7. https://www.egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/47168/1/Unit-14.pdf
6. https://www.allresearchjournal.com/archives/2015/vol1issue2/PartC/6-11-41-301.pdf